ईद मीलादुन्नबी
सवाल व जवाब की रोशनी में
मुरत्तिब
इंजीनियर मुहम्मद शाहिद अख़तर
तसहीह़ व तख़रीज
मुफ़्ती मुहम्मद मुजाहिद हुसैन ह़बीबी
नाशिर
मदीनतुल उ़लूम इन्स्टीट्यूट, तोपसिया
ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, पश्चिम बंगाल
6, तालतला लेन–14, फ़ोनः 09830367155

ईद मीलादुन्नबी

सवाल व जवाब की रोशनी में

मुरत्तिब

इंजीनियर मुहम्मद शाहिद अख़तर

तसह़ीह़ व तख़रीज

मुफ़्ती मुहम्मद मुजाहिद हुसैन ह़बीबी

हिन्दी

मुग़ीस़ अह़मद ख़ान क़ादिरी

अमेठी (यू0 पी0)

नाशिर

मदीनतुल उ़लूम इन्स्टीट्यूट, तोपसिया

ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, पश्चिम बंगाल

6, तालतला लेन–14, फ़ोनः 09830367155

राय गेरामी

मुबल्लिग़े इस्लाम ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मुजाहिद हुसैन ह़बीबी

नाएब सेक्रेट्री: ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, पश्चिम बंगाल

मीलाद शरीफ़ की अ़ज़मतों का क्या कहना! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने कुरआन करीम में मीलादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्र फ़रमाया है। अम्बिया–ए–केराम और मुक़र्रब फ़रिश्ते उस मह़फ़िल में मौजूद थे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुद हुज़ूर सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपनी विलादत की तारीख़ मनाया करते थे, सह़ाबा केराम ने भी हुज़ूर की विलादत व बिअ़स़त और आपके ज़रिये ईमान की दौलत से सरफ़राज़ होने पर अल्लाह के शुक्र की अदायगी के लिये मह़फ़िलें मुन्अ़क़िद कीं। रसूले आज़म सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिदे नबवी में नात की मह़फ़िल मुन्अ़क़िद करते, ह़ज़रत ह़स्सान और दूसरे सह़ाबा हुज़ूर की बारगाह में अ़क़ीदत व मुह़ब्बत के फूल पेश करते थे। ह़दीस़ व तारीख़ की किताबों में इसके दर्जनों सुबूत मौजूद हैं।

इसी बिना पर नस्ल–दर–नस्ल मुसलमान मीलाद मुबारक की मह़फ़िलें मुन्अ़क़िद करते रहे हैं और रसूल की

गुलामी का सुबूत पेश करके ख़ुदा के इनामात का ज़ख़ीरा नाम–ए–आमाल में जमा कराते रहे हैं।

मगर हाय रे क़िस्मत की बरबादी! जिस ज़ाते गेरामी की मीलादे मुबारक से बन्दगाने ख़ुदा को ईमान व इस्लाम की दौलतें नसीब हुईं उसी की महफ़िले मीलाद को नाम निहाद मुसलमान बिदअ़ात व ख़ुराफ़ात में शुमार कर रहे हैं, सादा दिल नौजवान और ऐसे पढ़े लिखे लोग उनका ख़ास निशाना हैं जो दुनिया की तालीम से अगर्चे ख़ातिरख़्वाह आरास्ता हैं लेकिन दीनी शुऊ़र व सलीक़े से बिल्कुल कोरे हैं। ऐसे में ज़रूरत थी एक ऐसी किताब की जो आ़म फ़ह्म लबो लहजे में हो ताकि आ़म लोगों के ज़ह्नो फ़िक्र की सफ़ाई का ज़रिया बन जाए और अह्ले सुन्नत के मुख़ालिफ़ीन का मुँह तोड़ जवाब हो जाए। मुबारकबाद के लाएक़ हैं ब्रादरे गेरामी ''**मुह़म्मद शाहिद अख़्तर**'' साह़ब जिन्होंने इस ज़रूरत को समझा और निहायत ही मेह़नत के साथ आ़म लबो लहजा में इस किताब को तरतीब दिया। मौसूफ़ अगर्चे पेशे से इंजीनियर हैं फिर भी दीनो सुन्नियत का दर्द उनकी नस नस में रचा बसा है। उनके इसी सच्चे जज़्बे की क़द्र करते हुए मैंने अपनी मसरूफ़ियात को ताक़ पर रखते हुए किताब की तसह़ीह़ व तख़रीज की ज़िम्मेदारी कुबूल कर ली और मुम्किन ह़द तक तसह़ीह़ व तख़रीज कर दी।

दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीब व मह़बूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सदक़े तुफ़ैल किताब के नफ़ा को आ़म फ़रमाए और इसे मुरत्तिब क़ारी और नाशिर के लिये नजात व मग़फ़िरम का ज़रिया बनाए और ब्रादरे गेरामी

''**मुह़म्मद शाहिद अख़्तर**'' साह़ब को इसी तरह दीन व सुन्नियत की तह़रीरी ख़िदमात अन्जाम देते रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। **आमीन!**

दुअ़ा गो

मुह़म्मद मुजाहिद हुसैन ह़बीबी

नाएब सेक्रेट्रीः ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, पश्चिम बंगाल

मोहतमिमः मदीनतुल उ़लूम इण्स्टीट्यूट, तोपसिया

7 रबीउ़ल अव्वल 1435 हिजरी/9 जनवरी 2014 ई0

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अपनी बात

इस्लाम मुख़ालिफ़ ताक़तें हमेशा से कोशिश करती रही हैं कि किसी तरह मुसलमानों के दिलों से नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुह़ब्बत को निकाल दिया जाए ताकि मुस्लिम क़ौम ईमान की रूह़ से मह़रूम होकर बरबादी की घाट उतर जाए। सलमान रूशदी हो या तस्लीमा नसरीन या डन्मार्क का गुस्ताख़ कार्टूनिस्ट सब ने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शान ही पर ह़मला किया।

यहाँ क़ाबिले तवज्जो बात ये है कि सुल्ह़े हुदैबिया के बाद जब उ़रवा अपनी क़ौम में वापस आया तो लोगों से कहने लगाः ''ऐ लोगो! मैंने क़ैसरो किसरा और नजाशी बादशाहों को देखा है मगर जितनी ताज़ीम मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सह़ाबा उनकी करते हैं उन बादशाहों की नहीं की जाती। अल्लाह की क़सम! जब मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम थूकते हैं तो सह़ाबा उसे अपने हाथों में लेकर अपने चेहरे और जिस्म पर मलते हैं, जब कोई हुक्म देते हैं तो सह़ाबा फ़ौरन उसकी तामील करते हैं, जब वुज़ू करते हैं तो सह़ाबा बचे हुए पानी को ह़ासिल करने के लिये कोशिश करते हैं, जब सह़ाबा उनसे बात करते हैं तो अपनी आवाज़ नीची रखते हैं और अदब से निगाहें झुका लेते हैं।'' फिर उ़रवा ने कहा कि तुम उनसे जंग का इरादा छोड़ दो और उनकी बात मान लो। (सह़ीह़ बुख़ारी, ह़िस्साः 3, ह़दीस़ः 889)

उ़रवा ने समझ लिया था कि जब नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का थूक सह़ाबा ज़मीन पर गिरने नहीं देते तो ख़ून कैसे ज़मीन पर गिरने देंगे? इन तारीख़ी

वाक़ियात व ह़ादस़ात को सैहूनी ताक़तों ने पढ़ा इसलिये उनकी कोशिश होती है कि मुसलमानों के सीनों से रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुह़ब्बत के जज़्बे को ख़त्म कर दिया जाए। इसके लिये उन्होंने मुसलमानों के दिलों में शिर्क व बिदअ़त का ख़ौफ़ पैदा किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कहना शिर्क है और मीलाद मनाना बिदअ़त है वग़ैरा वग़ैरा।

इसलिये मैंने ज़रूरी समझा कि नौजवान भाईयों के ज़ह्नो फ़िक्र से शुब्हों को दूर किया जाए। मुख़ालिफ़ीन अह्ले सुन्नत के मामूलात पर यूँ तो कई एक एतराज़ात करते हैं ख़ास तौर से मीलाद मुबारक की मह़फ़िल को बिदअ़त क़रार देते हैं इसलिये मैंने इस किताब में ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर किये गए एतराज़ात का कुरआन व ह़दीस़ की रोशनी में जवाब तह़रीर किया है ताकि अह्ले सुन्नत के मुख़ालिफ़ीन की जानिब से नौजवानों के दिलों में जो शक व शुब्हा पैदा कर दिया गया है वो दूर हो जाए और आ़म आदमी भी नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मुह़ब्बत करने वाला और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मीलाद मनाने वाला बन जाए।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि ख़ाकसार की किताब को आक़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के वसीले से कुबूल फ़रमाए और आक़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नअ़लैन का सदक़ा अ़ता फ़रमाए। **आमीन!**

मुह़म्मद शाहिद अख़्तर

21 सफ़र 1435 हिजरी/25 दिसम्बर 2013 ई0

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

निसा़र तेरी चहल पहल पर हज़ारों ई़दें रबीउ़ल अव्वल
सिवाए इबलीस के जहाँ में सभी तो ख़ुशियाँ मना रहे हैं

इमाम इब्ने कसी़र बयान करते हैं कि ''इबलीस चार बार बुलन्द आवाज़ से रोया हैः पहली बार जब अल्लाह ने उसे लई़न ठहरा कर उस पर लअ़नत की, दूसरी बार जब उसे ज़मीन पर भेजा गया, तीसरी बार हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विलादत के वक़्त और चौथी बार जब सूर–ए–फ़ातिह़ा नाज़िल हुई।'' (अल–बिदाया वन्निहाया मुतर्जम, ह़िस्साः 2, पेजः 570, मतबूअ़ाः मक्तबा दानिश, देवबन्द)

मालूम हुआ कि मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर चीख़ना, चिल्लाना, रोना और उसकी मुख़ालफ़त करना इबलीस का तरीक़ा है। मोमिन तो अपने आक़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विलादत पर ख़ुशियाँ मनाता है।

मीलाद का मतलबः मीलाद का मतलब ''पैदा होने का ज़माना'' या ''पैदाइश का वक़्त'' है। (फ़ीरोज़ुल्लुग़ात, पेजः 1332) आ़म बोल चाल में मीलाद से मुराद ज़िक्र की मह़फ़िल है जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विलादत का ज़िक्र हो, कुरआन पढ़ा जाए, नात और मन्क़बत वग़ैरा पढ़ी जाए। इसी तरह जश्ने ई़द मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मुराद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आमद की ख़ुशी में जुलूस निकालना, ख़ुशी मनाना, सदक़ा व ख़ैरात करना और विलादत के दिन रोज़ा रखना वग़ैरा है।

मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर किये गए सवालात और उनके जवाबात

सवाल 1:– क्या आप कुरआन मजीद से रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आमद पर ख़ुशी मनाने की दलील दे सकते हैं?

जवाब 1:– जी हाँ! अल्लाह तआ़ला कुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाता है: قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا तर्जमा: ''ऐ ह़बीब आप फ़रमा दीजिये कि अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रह़मत मिलने पर मुसलमानों को चाहिये कि ख़ुशियाँ मनाएँ।'' (सूर–ए–यूनुस, आयत: 58)

इस आयत में ये हुक्म दिया गया कि जब अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रह़मत नाज़िल हो तो मोमिनों को उस पर ख़ुशियाँ मनानी चाहिये। अब किसी ज़ह्न में ये सवाल आ सकता है कि क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अल्लाह की रह़मत हैं? जो हम उनकी आमद पर ख़ुशियाँ मनाएँ। इसका जवाब भी ख़ुद कुरआन दे रहा है। मुलाह़ज़ा करें: وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ''हमने तुम्हें नहीं भेजा मगर रह़मत सारे जहान के लिये।'' (सूर–ए–अम्बिया, आयत: 107)

अल–ह़म्दु लिल्लाह रसूले अ़रबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इस दुनिया में तशरीफ़ लाना रह़मत है और पहली आयत में अल्लाह तआ़ला हमें रह़मत मिलने पर ख़ुशियाँ मनाने का हुक्म दे रहा है। अब बताओ मुसलमानो! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ाते मुबारक से बढ़ के रह़मत कौन हो सकता है! तो मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ख़ुशियाँ क्यों न मनाया जाए?

अल–ह़म्दु लिल्लाह कुरआन की इन आयतों से आमदे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ख़ुशियाँ मनाना स़ाबित हुआ।

सवाल 2:– क्या आप स़ाबित कर सकते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी मीलाद मनाई?

जवाब 2:– जी हाँ! ह़दीस़ मुलाह़ज़ा फ़रमाएँ: ह़ज़रत अबू क़तादा रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पीर (सोमवार) के दिन रोज़ा रखने के बारे में पूछा गया तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: ''इसी रोज़ मेरी विलादत हुई, इसी रोज़ मेरी बिअ़स़त हुई और इसी रोज़ मेरे ऊपर कुरआन नाज़िल किया गया।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस़: 2807, सुनने अबू दाऊद, ह़दीस़: 2428, मुस्नद इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, ह़दीस़ 23215)

इस ह़दीस़ से स़ाबित हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हर पीर के दिन रोज़ा रख कर अपनी मीलाद का ख़ुद एहतेमाम किया है। लिहाज़ा स़ाबित हुआ कि दिन मुक़र्रर करके यादगार मनाना सुन्नत है। अल–ह़म्दु लिल्लाह

सवाल 3:– क्या सह़ाबा केराम रिदवानुल्लाहि अ़न्हुम ने भी कभी मीलाद की मह़फ़िल मुन्अ़क़िद की है?

जवाब 3:– जी हाँ! इमाम बुख़ारी के उस्ताद इमाम अह़मद बिन ह़म्बल लिखते हैं: सय्यिदुना अमीर मुआ़विया रदियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं: एक रोज़ रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का अपने असह़ाब के ह़लक़े से गुज़र हुआ, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: क्यों बैठे हो? उन्होंने कहा: हम अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करने और उसने हमें जो इस्लाम की हिदायत अ़ता फ़रमाई उस पर ह़म्द व स़ना (तारीफ़) बयान करने और उसने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भेज कर हम पर जो एह़सान किया है उसका शुक्र अदा करने के लिये बैठे थे। आपने फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! क्या तुम इसी के लिये बैठे थे? सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया: अल्लाह की क़सम! हम सब इसी के लिये बैठे थे। इस पर आप

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः अभी मेरे पास जिबरईल अ़लैहिस्सलाम आए थे, उन्होंने कहा कि अल्लाह तुम्हारी वजह से फ़रिश्तों पर फ़ख़्र कर रहा है। (सुनने नसई, ह़दीस़ः 5443, अल–मोजमुल कबीरः तिबरानी, ह़दीस़ः 16057)

इस ह़दीस़ से स़ाबित हुआ कि सह़ाबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मीलाद (पैदाइश) पर शुक्र अदा करते थे। यहाँ ये बात भी क़ाबिले ज़िक्र है कि जो लोग हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मीलाद की मह़फ़िल सजाते हैं और उसमें शरीक होते हैं, अल्लाह ऐसे बन्दों पर फ़रिश्तों की जमाअ़त में फ़ख़्र फ़रमाता है और हाँ! हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्र अल्लाह ही का ज़िक्र है इस पर कुरआन और हुज़ूर की ह़दीसें गवाह हैं।

सवाल 4:– क्या हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विलादत की ख़ुशी मनाने पर फ़ाइदा पहुँचता है?

जवाब 4:– जी हाँ! अबू लहब जो कुफ़्र की ह़ालत में मरा, उसका मामला ये था कि उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बिअ़स़त के बाद अपनी बाक़ी बची ज़िन्दगी इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम की मुख़ालफ़त में गुज़ारी लेकिन उसके मरने के बाद रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के चचा ह़ज़रत अ़ब्बास रदियल्लाहु अ़न्हु ने उसको ख़्वाब में देखा, आप रदियल्लाहु अ़न्हु ने उससे पूछा कि मरने के बाद तुझ पर क्या गुज़री? उसने जवाब दिया कि मैं दिन रात सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तला हूँ लेकिन जब पीर का दिन आता है तो मेरे अ़ज़ाब में कमी कर दी जाती है और मेरी उँगलियों से पानी जारी हो जाता है, जिसे पीकर मुझे सुकून मिलता है। अ़ज़ाब में कमी की वजह ये है कि मैंने पीर के दिन अपने भतीजे (मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की विलादत की ख़ुशख़बरी सुन कर अपनी ख़ादिमा सुवैबा को इन उँगलियों

का इशारा करते हुए आज़ाद कर दिया था। (सहीह़ बुख़ारी, ह़दीस़ः 5101)

ये वाकि़या ह़ज़रत ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा से मरवी है जिसे मुह़द्दिस़ीन की बड़ी तादाद ने मीलाद के वाकि़या के बयान में नक़्ल किया है।

सह़ीह़ बुख़ारी की रिवायत है, उरवा ने बयान किया है कि सुवैबा अबू लहब की आज़ाद की हुई बाँदी है। अबू लहब ने उसे आज़ाद किया तो उसने नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को दूध पिलाया।

पस जब अबू लहब मर गया तो उसके बाज़ घर वालों को वो बुरे ह़ाल में दिखाया गया। उसने उससे (यानी अबू लहब से) पूछाः ''तूने क्या पाया?'' अबू लहब बोलाः ''मेंने तुम्हारे बाद कोई राह़त नहीं पाई सिवाए इसके कि सुवैबा को आज़ाद करने की वजह से जो इस (उँगली) से पिलाया जाता है।'' (सहीह़ बुख़ारी, ह़दीस़ः 5101)

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस़ देहलवी (958–1052 हिजरी) इस रिवायत को बयान करने के बाद लिखते हैं कि ''ये रिवायत मीलाद के मौके़ पर ख़ुशी मनाने और सदक़ा व ख़ैरात करने वालों के लिये दलील और सनद है। अबू लहब जिसकी मज़म्मत (बुराई) में कुरआन पाक में एक पूरी सूर–ए–नाज़िल हुई जब वो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विलादत की ख़ुशी में लौंडी आज़ाद करके अ़ज़ाब में कमी ह़ासिल कर लेता है तो उस मुसलमान की ख़ुश–नसीबी का क्या आ़लम होगा जो अपने दिल में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुह़ब्बत की वजह से मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दिन मुह़ब्बत और अ़क़ीदत का इज़्हार करे। (मदारिजुन्नुबुव्वा, हि़स्साः 2, पेजः 19)

दोस्तो ज़रा ग़ौर करो! अबू लहब जैसे काफि़र को जब मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ख़ुशी मनाने पर

फ़ाइदा मिला तो हम मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के आशिक़ क्योंकर महरूम रह सकते हैं?

सवाल 5:– मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मौक़े पर झण्डा लगाना कहाँ से स़ाबित है?

जवाब 5:– इमाम सुयूती रह़मतुल्लाहि अ़लैहि बयान करते हैं कि ''हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तशरीफ़ लाने के वक़्त ह़ज़रत जिबरईल अमीन सत्तर हज़ार फ़रिश्तों के झुरमुट में हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के आस्ताना मुबारक पर तशरीफ़ लाए और जन्नत से तीन झण्डे भी लेकर आए, उनमें से एक झण्डा पूरब में गाड़ा, एक पश्चिम में और एक काबा मुअ़ज़्ज़मा पर।'' (दलाइलुन्नुबुव्वा, ह़िस्साः 1, पेजः 82)

रूहुलअमीं ने गाड़ा काबे की छत पे झण्डा
ताअ़र्श उड़ा फरेरा सुबह़े शबे विलादत

अ**ल–ह़म्दु लिल्लाह** मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर झण्डा लगाना फ़रिश्तों की सुन्नत है।

सवाल 6:– ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दिन जुलूस क्यों निकालते हैं?

जवाब 6:– आक़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिये जुलूस निकालना कोई नई बात नहीं है बल्कि सह़ाबा केराम रदियल्लाहु अ़न्हुम ने भी जुलूस निकाला है। सह़ीह़ मुस्लिम की ह़दीस़ में है कि जब आक़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हिजरत करके मदीना तशरीफ़ ले गए तो लोगों ने ख़ूब जश्न मनाया, तो मर्द व औ़रत अपने घरों की छत पर चढ़ गए और नौजवान लड़के, गुलाम व ख़ुद्दाम रास्तों में फिरते थे और नार–ए–रिसालत लगाते और कहते **या मुह़म्मद या रसूलल्लाह! या मुह़म्मद या रसूलल्लाह!** (सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस़ः 7707)

एक रिवायत में आता है कि हिजरते मदीना के मौक़े पर जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मदीना के क़रीब पहुँचे तो बुरैदा असलमी अपने सत्तर साथियों के साथ दामने इस्लाम से वाबस्ता हुए और अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर मदीना शरीफ़ में आपका दाख़िला झण्डा के साथ होना चाहिये, फिर उन्होंने अपने अ़मामे को नेज़ा पर डाल कर झण्डा बनाया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के आगे आगे रवाना हुए। (वफ़ाउल–वफ़ा, हिस्सा: 1, पेज: 243)

यहाँ ये बात भी याद रखने की है कि जुलूस निकालना स़क़ाफ़त (culture) का हिस्सा है। दुनिया के हर ख़ित्ते में जुलूस निकाला जाता है, कहीं स्कूल व कॉलेज के मा–तह़त, तो कहीं सियासी जमाअ़त के मा–तह़त जुलूस निकाला जाता है। कुछ दिन पहले डन्मार्क के एक कार्टूनिस्ट ने नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ी की तो पूरे आ़लमे इस्लाम में जुलूस निकाला गया और एह़तिजाज (प्रदर्शन) किया गया। इसी तरह ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मौक़े पर पूरे आ़लमे इस्लाम में मुसलमान जुलूस निकालते हैं और आक़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मुह़ब्बत का इज़हार करते हैं।

सवाल 7:– इस्लाम में दो ही ईदें हैं, ये तीसरी ईद कहाँ से आई?

जवाब 7:– ये कहना कि इस्लाम में सिर्फ़ दो ईदें हैं सरासर जहालत है। अहादीसे करीमा से स़ाबित है कि जुमा भी ईद है। अब जुमा ईद क्यों है? वो भी जान लीजिये।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रदियल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: ''बेशक ये ईद का दिन है जिसे अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों के लिये (बरकत वाला) बनाया है, पस जो कोई जुमा की नमाज़ के लिये आए तो गुस्ल करके आए

और अगर हो सके तो ख़ुशबू लगा कर आए और तुम पर मिस्वाक करना ज़रूरी है।'' (इब्ने माजा, हिस्साः 1, हदीसः 1098, तिबरानी, हिस्साः 7, हदीस 7355)

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः ''बेशक जुमा का दिन ईद का दिन है, पस तुम अपने ईद के दिन को यौमे सियाम (रोज़ा का दिन) मत बनाओ मगर ये कि तुम उसके पहले या उसके बाद के दिन का रोज़ा रखो।'' (सहीह इब्ने खुज़ैमा, हदीस 1980, सहीह इब्ने हिब्बान, हदीसः 3680)

हदीस में हैः ''जुमा का दिन तमाम दिनों का सरदार है और अल्लाह के यहाँ तमाम दिनों से अ़ज़ीम है और ये अल्लाह के यहाँ ईदुल अज़हा और ईदुल फ़ित्र दोनों से अफ़ज़ल है। (अल–मोजमुल कबीरः तिबरानी, हदीसः 4387)

अब सवाल ये है कि आख़िर क्या वजह है कि जुमा का दिन ईद भी है, सब दिनों से अफ़ज़ल भी है बल्कि ईदुल अज़हा और ईदुल फ़ित्र से भी अफ़ज़ल है?

इसका जवाब भी हदीसे पाक से मुलाहज़ा करेंः

हज़रत औस बिन औस रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः ''तुम्हारे दिनों में सबसे अफ़ज़ल दिन जुमा का दिन है। इस दिन हज़रत आदम की विलादत हुई, इसी रोज़ उनकी रूह क़ब्ज़ की गई और इसी रोज़ सूर फूँका जाएगा। पस इस रोज़ कसरत से मुझ पर दुरूद भेजा करो, बेशक तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (सुनने इब्ने माजा, हदीसः 1138, सुनने अबू दाऊद, हदीसः 1049, सुनने नसई, हदीसः 1385)

ज़िक्र की गई हदीसों से मालूम हुआ कि जुमा का दिन आदम अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश का दिन है इसलिये ये ईद का दिन है। तो भला जिस दिन दोनों जहाँ के सरदार, दोनों जहाँ की रहमत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मीलाद

(पैदाइश) हो, वो ईद का दिन क्यों न हो? बल्कि ये तो ईदों की ईद है कि हमें सारी ईदें इसी ईद की वजह से मिली हैं। इन ह़दीसों से ये भी मालूम हुआ कि मुसलमान साल में दो ईदें नहीं बल्कि 50 से ज़्यादा ईदें मनाता है। **अल–ह़म्दु लिल्लाह**

इसके अ़लावा कुरआन पाक में ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ नक़्ल है कि: اللّٰهُمَّ رَبَّنَاۤ اَنْزِلْ عَلَیْنَا مَآىِٕدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِیْدًا لِّاَوَّلِنَا وَ اٰخِرِنَا **तर्जमा:** ऐ हमारे रब हम पर आसमान से नेमतों का दस्तरख़्वान नाज़िल फ़रमा कि वो हमारे लिये ईद क़रार पाए और वो तेरी तरफ़ से निशानी बने और तू बेहतर रिज़्क़ अ़ता फ़रमाने वाला है। (सूर–ए–माइदा, आयतः 114)

ग़ौर फ़रमाएँ! कि ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम दस्तरख़्वान नाज़िल होने के दिन को ईद क़रार दे रहे हैं। अब आप ख़ुद फ़ैसला करें कि जिस दिन फ़ख़्रे मौजूदात, दुनिया की पैदाइश का सबब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जलवागर हों वो दिन क्यों न ईद क़रार पाए?

सवाल 8:– हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैदाइश का दिन 12 रबीउ़ल अव्वल नहीं है बल्कि 9 रबीउ़ल अव्वल है। लिहाज़ा इस दिन क्यों ख़ुशी नहीं मनाते हैं?

जवाब 8:– हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैदाइश की तारीख़ के मुतअ़ल्लिक़ मुअर्रिख़ीन (historians) की राय मुख़्तलिफ़ है, मगर जिस तारीख़ पर ह़दीस़ के बहुत से इमामों और ओ़लमा–ए–केराम ने इत्तिफ़ाक़ किया, वो बारह रबीउ़ल अव्वल है। ह़वाले पेशे ख़िदमत हैं:

1– **ह़ाफ़िज़ इब्ने कस़ीर (774 हिजरी)** फ़रमाते हैं: ''इब्ने अ़ब्बास रदियल्लाहु अ़न्हु इरशाद फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विलादत आ़मे फ़ील[1], पीर के दिन, माह रबीउ़ल अव्वल की 12 तारीख़ को हुई।'' (अल–बिदाया वन्निहाया, हि़स्साः 2, पेजः 282)

इसके अ़लावाः

2– सीरतुन्नबीः इब्ने कस़ीर, हि़स्साः 1, पेजः 143, मतबूआ़ः हा़फ़िज़ी बुक डिपो, देवबन्द

3– सीरतुन्नबीः इब्ने हशाम, हि़स्साः 1, पेजः 182, मतबूआ़ः एतिक़ाद पब्लिकेशंज़ हाउस (नई देहली)

4– मदारिजुन्नुबुव्वा, हि़स्साः 2, पेजः 23, मतबूआ़ः अदबी दुनिया (नई देहली)

5– तारीख़े इब्ने ख़ुलदून, हि़स्साः 1, पेजः 32, मतबूआ़ः मक्तबा फ़ारान, देवबन्द

6– शअ़बुल ईमान, हि़स्साः 2, पेजः 148, मतबूआ़ः इदारा इशाअ़ते इस्लाम, देवबन्द

7– दलाइलुन्नुबुव्वा, हि़स्साः 1, पेजः 95 वग़ैरा वग़ैरा।

ज़िक्र की गई किताबों में और दूसरी कई किताबों में यही लिखा है कि आक़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विलादत पीर के दिन बारह रबीउ़ल अव्वल को हुई।

नोटः अगर मुख़ालिफ़ीन अब भी ज़िद पर हैं कि विलादत 9 रबीउ़ल अव्वल को हुई तो हम कहते हैं आप 9 तारीख़ को ही ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मनाएँ, हमें कोई एतराज़ नहीं।

सवाल 9:– अगर विलादत 12 रबीउ़ल अव्वल को हुई तो वफ़ात भी उसी तारीख़ यानी 12 रबीउ़ल अव्वल को हुई फिर इस दिन ख़ुशी कैसे मना सकते हैं? ये तो ग़म मनाने का दिन हुआ।

[1] आ़मे फ़ील का मतलब है ''हाथी का साल'' जिस साल अबरहा अपने हाथियों की फ़ौज लेकर काबा शरीफ़ ढाने आया था, अ़रब ने उस साल का नाम आ़मे फ़ील रख दियाः मुग़ीस़

जवाब 9:– याद रखें कि सोग (ग़म मनाना) सिर्फ़ तीन दिन है सिवाए बेवा के: ''किसी औ़रत के लिये जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखती है, ह़लाल नहीं कि अपने शौहर के सिवा किसी मय्यित पर तीन दिन से ज़्यादा सोग मनाए।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस़: 1280, सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस़: 3814)

और ये भी याद रखें कि एक लम्ह़ा के लिये अपनी शान के मुताबिक़ मौत का मज़ा चखने के बाद आक़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ज़िन्दा हैं। 12 रबीउ़ल अव्वल को ही विलादत और वफ़ात दोनों होने के बावुजूद भी इस दिन ग़म नहीं मनाया जा सकता क्योंकि जुमा के दिन आदम अ़लैहिस्सलाम बनाए गए और उसी दिन विसाल भी हुआ फिर भी अल्लाह तआ़ला ने जुमा को मुसलमानों के लिये ईद का दिन बनाया है जैसा कि पहले ह़दीस़ और तफ़सील गुज़र चुकी। इसी लिये 12 रबीउ़ल अव्वल को ख़ुशी मनाई जाएगी, ग़म नहीं मनाया जाएगा।

और हाँ! मुख़ालिफ़ीन को क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला से ये सवाल ज़रूर करना चाहिये कि जुमा को ही आदम की तख़लीक़ और विसाल के बावुजूद उसे ईद क्यों क़रार दिया? ग़म और ख़ुशी का दिन बना कर ग़म व अफ़सोस ज़ाहिर करने से क्यों मना कर दिया?

सवाल 10:– अगर मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इतनी ही अहम है तो सिर्फ़ हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में ही ये क्यों मनाई जाती है? दूसरे मुस्लिम मुल्कों में क्यों नहीं मनाई जाती?

जवाब 10:– अल–ह़म्दु लिल्लाह दुनिया के सैंतालीस मुल्क ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को क़ौमी तअ़तील (National holiday) के तौर पर मनाते हैं जिसमें से कुछ मुल्क तो ग़ैर मुस्लिम (सेकुलर) हैं जैसे हिन्दुस्तान, श्रीलंका, घाना, तंज़ानिया, माली वग़ैरा।

47 मुल्कों की तफ़सील नीचे दर्ज हैः

अफ़्रीक़ी मुल्कों में अलजीरिया, बेनन, कैमरून, नाइजीरिया वग़ैरा कुल 54 मुल्कों में से 25 मुल्कों में 12 रबीउ़ल अव्वल को क़ौमी तअ़तील के तौर पर जश्ने ईद मीलादुन्नबी मनाया जाता है।

मशरिक़े वुस्ता (Central Asia) में बह़रैन, ईरान, इ़राक़, कुवेत, लबनान, शाम, फ़िलिस्तीन वग़ैरा कुल 14 मुल्कों में से 11 मुल्कों में जश्ने ईद मीलादुन्नबी को क़ौमी तअ़तील के तौर पर मनाया जाता है। इसराईल, सऊ़दी अ़रब और क़तर ही 3 ऐसे मुल्क हैं जो ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नहीं मनाते। ईरान को छोड़ बाक़ी सभी मुल्कों में 12 रबीउ़ल अव्वल ही को जश्ने ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मनाया जाता है।

एशियाई मुल्कों में अफ़ग़ानिस्तान, बंगलादेश, बरूनी, हिन्दुस्तान, इण्डोनेशिया, पाकिस्तान, मलेशिया, श्रीलंका वग़ैरा 12 रबीउ़ल अव्वल को क़ौमी तअ़तील के तौर पर ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मनाते हैं।

इसके अ़लावा कनाडा, अमरीका, बरतानिया, रूस और दूसरे यूरोपियन मुल्कों में मुसलमान बड़ी शानो शौकत के साथ जश्ने ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मनाते हैं। (**नोटः** डिपार्टमेन्ट औक़ाफ़ यूनाइटेड अ़रब अमारात से ये जानकारी ली गई है।)

सवाल 11ः– सहा़बा केराम रिदवानुल्लाहि अ़न्हुम ने जश्ने ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नहीं मनाया, तो हम क्यों मनाएँ?

जवाब 11ः– सहा़बा केराम रिदवानुल्लाहि अ़न्हुम का कोई अ़मल करना तो हमारे लिये हुज्जत है लेकिन कोई अ़मल न करना हमारे लिये हुज्जत नहीं। आप ख़ुद बताएँ कि सहा़बा केराम रिदवानुल्लाहि अ़न्हुम ने ज़ेर–ज़बर वाला कुरआन पढ़ा

है? अगर नहीं तो आप क्यों पढ़ते हैं? क्या सहाबा केराम ने कभी ये कहा कि बुख़ारी शरीफ़, कुरआन शरीफ़ के बाद सबसे मोतबर किताब है? अगर नहीं तो आप क्यों कहते और मानते हैं? क्या सहाबा ने कभी ख़त्मे बुख़ारी शरीफ़ क्या? क्या कभी जलस–ए–दस्तारबंदी की? अगर नहीं तो आप क्यों करते हैं?

इस तरह की सैकड़ों मिसालें दी जा सकती हैं जिन्हें आपने और आपकी जमाअ़त ने जाइज़ कर रखा है लेकिन जब बात जश्ने ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आती है तो ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नाजाइज़ क्यों? क्या कोई स़ाबित कर सकता है कि आमदे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर किसी सहाबी को ग़म हुआ या किसी सह़ाबी को ख़ुशी न हुई हो?

जश्ने ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की अस्ल कुरआन, ह़दीस़ और सह़ाबा केराम से स़ाबित है। काम के तरीक़े में फ़र्क हो सकता है पर अस्ल मौजूद है।

सवाल 12:– ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मौक़े पर नात शरीफ़ पढ़ी जाती है, क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में भी नात पढ़ी गई है?

जवाब 12:– नात हमेशा से अ़क़ीदतों और मुह़ब्बतों को ज़ाहिर करने का ज़रिया और रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुह़ब्बत को बढ़ावा देने का ज़रिया ख़्याल की जाती रही है। सह़ाबा के ज़माने में बाक़ाइदा नात की मह़फ़िलें सजा करती थीं जिनमें रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और इस्लाम के दुश्मनों की बेहूदा बातों के जवाबात दिये जाते थे।

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा रदियल्लाहु तआ़ला अन्हा इरशाद फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिदे नबवी में ह़स्सान बिन स़ाबित रदियल्लाहु अ़न्हु के लिये मिम्बर रखवाते थे ताकि वो उस पर खड़े होकर रसूल

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तारीफ़ में फ़ख़्रिया अशआ़र (नात शरीफ़) पढ़ें या यूँ बयान किया कि वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ से काफ़िरों के इल्ज़ामों का जवाब दें और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ह़ज़रत ह़स्सान रदियल्लाहु अ़न्हु के लिये फ़रमातेः ''अल्लाह तआ़ला रूहुलकुद्स (ह़ज़रत जिबरईल अमीन) के ज़रिये ह़स्सान की मदद फ़रमा जब तक कि वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ से काफ़िरों के इल्ज़ामों का जवाब देते रहें या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शान में फ़ख़्रिया अशआ़र पढ़ते रहें।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस़ः 453, सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस़ः 6539, सुनने नसई, ह़दीस़ 724)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु इरशाद फ़रमाते हैं कि उन्होंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को ह़ज़रत अबू तालिब के इस शेर को नमूने के तौर पर पेश करते हुए सुनाः

''वो गोरे (मुखड़े वाले सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) जिनके चेहरे के वसीले से बारिश माँगी जाती है, यतीमों की फ़रयाद सुनने वाले, बेवाओं के सहारा''

ह़ज़रत उ़मर बिन ह़मज़ा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि ह़ज़रत सालिम (बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रदियल्लाहु अ़न्हुम) ने अपने वालिदे माजिद से रिवायत की कि कभी मैं शाए़र की इस बात को याद करता और कभी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के चेहर–ए–अक़्दस को तकता कि इस (रूख़े ज़ेबा) के वसीले से बारिश माँगी जाती है तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम (मिम्बर से) उतरते भी नहीं कि सारे परनाले बहने लगते।

''वो गोरे (मुखड़े वाले सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) जिनके चेहरे के वसीले से बारिश माँगी जाती है, यतीमों की फ़रयाद सुनने वाले, बेवाओं के सहारा''
ऊपर ज़िक्र शेर अबू तालिब का है। (सहीह़ बुख़ारी, हि़स्साः 1, ह़दीस़ः 963, मुस्नदे अह़मद बिन ह़म्बल, हि़स्साः 2, ह़दीस़ः 5673)

ह़ज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मदीना की गलियों से गुज़रे तो चन्द लड़कियाँ दफ़ बजा रही थीं और गा रही थीं कि ''हम बनू नज्जार की लड़कियाँ कितनी ख़ुशनसीब हैं कि मुह़म्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम (जैसी हस्ती) हमारे पड़ौसी हैं।'' तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने (उनकी नात सुन कर) इरशाद फ़रमाया कि मेरा (अल्लाह) ख़ूब जानता है कि मैं भी तुमसे बे–ह़द मुह़ब्बत रखता हूँ।

इनके अ़लावा और भी ह़दीसें मौजूद हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में नात पढ़ी गई और अल–ह़म्दु लिल्लाह 1435 सालों से ये सिलसिला जारी है और अह्ले मुह़ब्बत आज भी आक़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बारगाह में नातों का तोह़फ़ा पेश करते रहते हैं।

सवाल 13:– क्या मुह़द्दिस़ों, इमामों और ओ़लमा–ए–इस्लाम ने भी मीलादुन्नबी मनाया या उसे मनाने को जाइज़ कहा है?

जवाब 13:– अल–ह़म्दु लिल्लाह मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ऐसी अ़ज़ीम इबादत और बरकत भरी ख़ुशी है कि उम्मते मुस्लिमा के बड़े बड़े मुह़द्दिस़, मुफ़स्सिर, फ़क़ीह, तारीख़निगार (इतिहासकार) और ओ़लमा–ए–उम्मत ने ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर बेशुमार किताबें लिखीं और अ़मली तौर पर ख़ुद मीलादुन्नबी मनाया है। उनकी लम्बी फ़ेहरिस्त है, कुछ के नाम हम यहाँ तह़रीर कर रहे हैंः

1– अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी (597 हिजरी)

2– इमाम शम्सुद्दीन जज़री (660 हिजरी)
3– शारेह़ मुस्लिम इमाम नौवी के शैख़ इमाम अबू शामा (665 हिजरी)
4– इमाम कमालुद्दीन अल–अफ़वदी (748 हिजरी)
5– इमाम ज़हबी (748 हिजरी)
6– इमाम इब्ने कस़ीर (774 हिजरी)
7– इमाम शम्सुद्दीन बिन नासिरूद्दीन दमिश्क़ी (842 हिजरी)
8– इमाम अबू ज़र अल–इ़राक़ी (826 हिजरी)
9– शारेहे़ बुख़ारी साहि़बे फ़तहुलबारी अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी (852 हिजरी)
10– इमाम शम्सुद्दीन सख़ावी (902 हिजरी)
11– इमाम जलालुद्दीन सुयूती (911 हिजरी)
12– इमाम क़स्तलानी (923 हिजरी)
13– इमाम मुह़म्मद बिन यूसुफ़ अल–सालिह़ी (942 हिजरी)
14– इमाम इब्ने ह़जर मक्की (973 हिजरी)
15– शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस़ देहलवी (1052 हिजरी)
16– इमाम ज़रक़ानी (1122 हिजरी)
17– ह़ज़रत शाह वलीयुल्लाह मुह़द्दिस़ देहलवी (1179 हिजरी)
18– ओ़लमा–ए–देवबन्द के पीर व मुर्शिद ह़ाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की (1233 हिजरी)
19– मौलाना अ़ब्दुल ह़ई लखनवी (1304 हिजरी) वग़ैरा

आज कल कुछ जाहिल और फ़ितना फैलाने वाले लोग कहते हैं कि मीलाद मनाना बिदअ़त है। तो क्या ये लोग बता सकते हैं कि क्या ये सारे के सारे मुह़द्दिस़, मुफ़स्सिर, इमाम और आ़लिम ह़ज़रात बिदअ़ती और गुमराह थे? (मआ़ज़ल्लाह)

इमाम क़स्तलानी शारेहे़ बुख़ारी फ़रमाते हैंः हुज़ूर की पैदाइश के महीने में अह्ले इस्लाम हमेशा से मीलाद की महफ़िल मुन्अ़क़िद करते चले आ रहे हैं, ख़ुशी के साथ खाना

पकाते हैं, आ़म दावत करते हैं, इन रातों में क़िस्म क़िस्म की ख़ैरात करते हैं, ख़ुशी ज़ाहिर करते हैं, नेक कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मीलाद शरीफ़ पढ़ने का एहतेमाम करते हैं जिनकी बरकतों से अल्लाह का उन पे फ़ज़्ल होता है और ख़ास तजर्बा है कि जिस साल मीलाद हो वो मुसलमानों के लिये अमन का बाइ़स़ है। (ज़रक़ानी अ़लल–मवाहिब, पेजः 139)

सवाल 14ः– आज जिस तरह ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मनाई जाती है ये तो बिदअ़त है।

जवाब 14ः– सबसे पहले तो ये जानना ज़रूरी है कि शरीअ़त में बिदअ़त से मुराद क्या है और उसकी कितनी क़िस्में हैं?

इमाम नौवी रह़मतुल्लाहि अ़लैहि (676 हिजरी) फ़रमाते हैंः शरीअ़त में बिदअ़त से मुराद वो काम हैं जो हुज़ूर नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में न थे और ये बिदअ़त ''ह़सना'' और ''क़बीह़ा'' में तक़सीम होती है। (नौवीः शरहे़ सह़ीह़ मुस्लिम, हि़स्साः 1, ह़दीस़ः 286)

मस़लन ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दौर में लोग अलग अलग तरावीह़ की नमाज़ पढ़ा करते थे, उन्होंने सबको एक इमाम के पीछे जमा किया और फ़रमायाः ''ये अच्छी बिदअ़त है।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, हि़स्साः 1, ह़दीस़ः 2010)

तो पता चला कि हर बिदअ़त ऐसी नहीं जो बन्दे को जहन्नम ले जाए बल्कि बिदअ़त की एक क़िस्म ह़सना भी है जो जन्नत ले जाने वाली है। अगर हर बिदअ़त गुमराही है तो ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की इस बिदअ़त पर आप क्या फ़तवा लगाएँगे?

इमाम शाफ़ई रह़मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हर काम जो शरीअ़त के किसी अस्ल के नीचे आ रहा हो और उसको पहली बार किया जा रहा हो फिर भी उसको **बिदअ़ते**

ज़लाला कह कर गुमराही नहीं क़रार दिया जाएगा बल्कि उसे ह़क़ और स़वाब कमाने का एक ज़रिया क़रार दिया जाएगा। (मनाक़िबे शाफ़ेई: बैहक़ी, ह़िस्सा: 1, पेज: 469)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जिसने दीन में कोई अच्छा तरीक़ा निकाला उसको उसका स़वाब मिलेगा और उसके बाद उस पर अ़मल करने वालों के बराबर उसे स़वाब मिलेगा जबकि अ़मल करने वालों की नेकी में कोई कमी नहीं की जाएगी और जिसने दीन में कोई बुरा तरीक़ा निकाला उसे उसका गुनाह मिलेगा और उसके बाद जो उस पर अ़मल करे उसका गुनाह मिलेगा और अ़मल करने वाले के गुनाह में कोई कमी नहीं होगी। (सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस़: 6975, सुनने नसई, ह़दीस़: 2566, मुस्नदे इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, ह़दीस़: 19674)

ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दिन आक़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शान में जुलूस निकाला जाता है, सदक़ा व ख़ैरात किया जाता है, ग़रीबों को खाना खिलाया जाता है, कुरआन की तिलावत की जाती है, नात व मन्क़बत पढ़ी जाती है। बिला शुब्हा ये सारे काम अच्छे काम हैं और इसके करने वाले को इसका बे–पनाह स़वाब मिलेगा।

सदाएँ दुरूदों की आती रहेंगी, जिन्हें सुन के दिल शाद होता रहेगा
ख़ुदा अह्ले सुन्नत को आबाद रक्खे, मुह़म्मद का मीलाद होता रहेगा

ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

बंगाल की सरज़मीन पर तहरीक ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत तक़रीबन **1970** ई0 से मस्लके अह्ले सुन्नत व जमाअ़त की फ़िक्र और नज़रिये को बढ़ावा देने के लिये रहनुमा–ए–अह्ले सुन्नत, इमामुत्तारिकीन, सिराजुस्सालिकीन, हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत अ़ल्लामा शाह मुहम्मद हबीबुर्रहमान क़ादिरी हाशिमी अ़लैहिर्रहमा के ख़लीफ़ा हज़रत हाजी मुद्दस्सिर हुसैन हबीबी साहब क़िब्ला की सर–बराही में दीनी ख़िदमात अन्जाम दे रही है।

मक़सद

- मुसलमानों में मज़हबी रूजहान पैदा करना, उन्हें फ़र्ज़ व वाजिब की तरग़ीब देना।
- दिलों में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी व इश्क़ का जज़्बा बेदार करना।
- मुसलमानों के दरमियान इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ की राह हमवार करना।
- स्कूलों में पढ़ने वाले छोटे बच्चों, नौजवानों और कारोबार से जुड़े हुए या माज़ूर हो चुके उ़म्र को पहुँचे हुए लोगों के लिये दीनी तालीम का इन्तिज़ाम करना।
- इस्लाम और मुसलमानों के तअ़ल्लुक़ से जो ग़लतफ़हमियाँ पैदा की जा रही हैं उनका सुबूतों की रोशनी में माकूल जवाब देना।
- आ़म–फ़ह्म ज़ुबान में आ़म लोगों के लिये मज़हबी किताबें छापना।
- जगह जगह दीनी व मज़हबी मज्लिसें करना।
- कुदरती आफ़तों या फ़सादों के सबब तबाह–हाल लोगों की मदद करना।

अल्लाह के करम से ये काम तीन डिपार्टमेंट

1– तालीम, 2– तब्लीग़ और 3– किताबों की पब्लिशिंग के ज़रिये अन्जाम दिये जा रहे हैं।

MADINATUL ULOOM INSTITUTE, TOPSIA

ALL INDIA TABLEEGH-E-SEERAT, KOLKATA, WB

Email: tableegh.e.seerat@gmail.com Mob. +91 9830367155